वर्ष - 5, अंक - 9, सितम्बर 2014

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

मानवता का संदेश देनेवाली फिल्में बनें

मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने कहा है कि आज ऐसे फिल्मों की जरूरत है जो समाज को जोड़े और हमारी परम्पराओं को जीवित रख सके। वे शुक्रवार को राजधानी के तारामंडल सभागार में तीन दिवसीय पांचवें जागरण फिल्म महोत्सव का उद्घाटन कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि समय के साथ समाज और संस्कृति में काफी बदलाव हुआ है। आज के दौर की फिल्मों में सामाजिक और राजनीतिक आलोचना ज्यादा है, जबकि आज ऐसे फिल्मों की जरूरत है जो मानवता का संदेश देती हों। युवाओं को ऊर्जा मिले और वे सार्थक दिशा की ओर मुड़ सकें। उन्होंने कहा कि एक दौर था जब फिल्मों के जरिए सभ्यता और संस्कृति का प्रचार-प्रसार होता था। लेकिन, आज समाज में विसंगतियां आ गई हैं। संयुक्त परिवार टूट रहे हैं। ऐसे में फिल्म निर्देशकों की भूमिका और महत्वूपर्ण हो जाती है। उनका दायित्व है कि वे अपनी संस्कृति को जीवित रखने के लिए सार्थक फिल्में बनाएं। आज विश्व बंधुत्व को आगे बढ़ाने की जरूरत है। इस मौके पर कला संस्कृति एवं खेल मंत्री विनय बिहारी ने कहा कि फिल्में दो प्रकार की होती हैं। एक कला और दूसरी व्यावसायिक। कला फिल्मों को बाजार प्रश्रय नहीं देता। ऐसे में दैनिक जागरण का प्रत्येक वर्ष जागरण फिल्म फेस्टिवल आयोजित कर दर्शकों को ऐसी फिल्में दिखाना सराहनीय कार्य है। उन्होंने जागरण परिवार को ऐसे आयोजन के लिए धन्यवाद दिया। उद्घाटन सत्र के बाद दर्शकों के लिए फिल्म 'मंजूनाथ' का प्रदर्शन किया गया है। फिल्म आइआइएम से प्रबंध की डिग्री प्राप्त स्वर्गीय मंजूनाथ के जीवन की सत्य घटना पर आधारित है। स्थानीय तारामंडल सभागार में 5वें जागरण फिल्म फेस्टिवल के पहले दिन, 'मंजूनाथ' के प्रदर्शन के बाद दर्शकों की प्रतिक्रिया और सवालों ने जाहिर कर दिया कि फिल्म झिझोड़ गई और दिलों में गहराई तक उतरी। फिल्म बिहार में भी दुनिया बदलने का जनून रखने वाले कुछ उन नायक व्यक्तियों के लिए ट्रिब्यूट बन गई जिनकी मौत 'लार्जर देन लाइफ' हो गई। जिनकी नृशंस हत्या माफियाओं और सत्ता के गहरे साजिशी गठजोड़ का नतीजा थी। एनएचआई के इंजीनियर सत्येन्द्र दुबे, एक्टिविस्ट महेश-सरिता या वन प्रमंडल

अधिकारी संजय सिंह जैसे कई नाम हैं इस फेहरिश्त में, जो आज भी लोगों की जुबान पर ढली कहानियां हैं।

जैसे ही फिल्म खत्म हुई, मंच पर थे इसके निर्देशक संदीप ए. वर्मा। दर्शकों ने उनसे फिल्म के संबंध में कई सवाल पूछे। पहला सवाल फिल्म के नायक मंजूनाथ के बारे में था जो एक बड़ी ऑयल कम्पनी का सेल्स आफिसर होने से पहले आइआइएम का स्टूडेंट था। एक ऐसा लड़का जो अपने आवेशों में खुद को अनिश्चितताओं में कभी भी डाल सकता था और एक ऐसी समानान्तर दुनिया का कोलम्बस होना चाह रहा था जो उसके ख्यालों में हमेशा दस्तक देती रहती है। यही वजह है कि उसके कल्पित शत्रु भी हैं और मुखालिफ हालात जब तक उसके अपने संसार में रेंग आते हैं। संदीप ए. वर्मा ने बताया कि जिन्दगी में गति और गेयता दोनों जीने वाला यह युवा जब ऑयल कम्पनी का सेल्स बनता है तो उसकी मुड़भेड़ डीजल में केरोसिन मिलाकर बेचने वाले डीलरों और पम्प वाले होती है। वह अपने लैपटॉप पर हिसाब लगाया कि एक लीटर डीजल में केरोसिन मिलाकर अन्ततः 'सरकार को 20 हजार करोड़ रूपये का नुकसान होगा। फिर इस करतूत से वे जाएंगे जिन्हें अंधेरे में रहना है, लालटेन या की रोशनी में और उन्हें दो जून की रोटी मशक्कत से मिलती है। वह अपनी लड़ाई बढ़ाता है और अन्ततः माफिया उसे गोली मार देते हैं। संदीप ए. वर्मा ने कहा कि यह दरअसल यह बताती है कि मुखालिफ हालात लड़ने वाले हीरो हमारे पास ही है। जरूरत उन्हें पहचानने की और उन्हें एप्रीशिएट की। उन्होंने कहा यह फिल्म हमारी-आपका लड़ाइयों लड़ रहे अनाम हीरोज श्रद्धांजलि है। तीन दिवसीय जागरण फिल्म फेस्टिवल के दूसरे दिन यूनानी फिल्म 'हलॉव-12', हिन्दी फिल्म 'क्वीन' एवं 'आंखों देखी' का प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर अभिनेता संजय मिश्रा ने दर्शकों से सीधी बातचीत की। तीसरे और अंतिम दिन 'ए वुमेन एज ए फ्रेंड', 'नेताजी सुभाष चन्द्र बोस : द फारगटेन हीरो' 'दो बीघा जमीन' और 'शुद्ध देशी रोमांस' प्रदर्शित की गयी।

इस आयोजन में बड़ी संख्या में युवाओं और मास मीडिया के छात्रों ने अपनी भागीदारी निभाई।

वर्ष - 5, अंक - 9, सितम्बर 2014
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
श्री विनय बिहारी

प्रधान संपादक
चंचल कुमार

संपादक
विनोद अनुपम

संपादक मंडल
सुबोध कुमार चौधरी
के.डी. पौड्यवल (संस्कृति)
अरविन्द ठाकुर (क्रीड़ा)
परवेज अख्तर (संग्रहालय)
अतुल कुमार वर्मा (पुरातत्व)

सम्पादकीय सम्पर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email : culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

प्रधान सम्पादक की कलम से

खेलना हमारी सहज प्रवृत्ति है। यह सार्वभौमिक है। दुनिया का हर व्यक्ति खेलने की इच्छा रखता हुआ बड़ा होता है। इस विषय में अनेक रोचक सिद्धांत हैं। इनमें से एक सिद्धांत 'सहज-नैसर्गिक प्रवृत्ति' का सिद्धांत है। खेल बच्चे की नैसर्गिक प्रवृत्ति में शामिल है, एक स्वाभाविक शारीरिक क्रिया है। एक अन्य सिद्धांत के मुताबिक बच्चे में अत्यधिक, अतिरिक्त ऊर्जा होती है और इसे उपयोग में लाने का एकमात्र माध्यम खेलकूद है। फिर, 'अभिव्यक्ति' का सिद्धांत है। बच्चे अपनी भावनाएँ प्रकट करना चाहते हैं। यह भी खेलकूद के माध्यम से होता है। खेल के दौरान बच्चे खुशी, उत्साह, गुस्सा, निराशा आदि विभिन्न भावनाएँ प्रकट करते हैं। खेल के माध्यम से वे अनेक नई बातें सीखते हैं। मैदान की कोई भी गतिविधि बच्चे में विभिन्न शारीरिक गुणों के विकास में सहायक होती है– जैसे बेहतर शारीरिक मुद्रा, अंग-संचालन, हाथ और आँख में समन्वय आदि। खेल में चाहे वह कुछ विशेष नियमों से बंधा हुआ ही क्यों न हो, वह स्वयं क्रियाओं की शुरूआत कर सकता है। खेल और क्रीड़ा बच्चे के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। बच्चा टीमवर्क की अच्छाइयों के बारे में सीखता है, खेल भावना को जज्ब करता है, उम्र बढ़ने के साथ-साथ कुछ नया सीखता है, मुश्किल परिस्थितियों का सामना हिम्मत से करना सीखता है; हाथ में लिए काम को एकाग्रता से करना सीखता है; बांटने, देने और मदद करने के फल का आनन्द उठाना सीखता है। खास तौर पर जब हम कुछ करते हुए सीखते हैं तो जीवन में उसका प्रभाव स्थायी होता है।

खेल हमारी कई तरह की व्यक्तिगत और सामाजिक क्षमताओं को प्रभावित कर सकता है, जैसे आत्मविश्वास, अनुशासन, दैहिक सजगता, नियम-पालन, निष्पक्षता, भावनाओं से निर्वाह, परस्पर-आदर भाव से रहना सीखना, हार-जीत से दो-चार होना, टीमवर्क और संवाद तथा सम्प्रेषण की दक्षताएँ कह सकते हैं इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चों ने समाजीकरण का नया पाठ सीखा, नए सामाजिक मूल्य सीखे। निश्चय ही एक बेहतर नागरिक बनने में जो अनुभव जिन्दगी भर उनके साथ रहेंगे।

संयुक्त राष्ट्र संघ के भूतपूर्व महासचिव कोफी अन्नान ने कहा था, "खेल हमारी वह सार्वभौमिक भाषा है जो लोगों को एक-दूसरे के करीब ला सकती है, शांति लाने के हमारे तमाम प्रयासों को जिससे बल मिल सकता है, और सहस्त्राब्दि विकास लक्ष्यों की प्राप्ति के हमारे उपक्रम को मदद मिल सकती है।" वास्तव में खेलों में सरहदें लाँघ जाने की ताकत होती है। बिहार खेल सम्मान खेल की इसी ताकत को स्वीकार करने की कोशिश है। हाकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के जन्म दिवस को देश भर में खेल दिवस के रूप मनाया जाता है, बिहार खेल सम्मान के लिए भी यह दिवस खास तौर पर रेखांकित किया गया है ताकि खेल की उस गौरवशाली परम्परा से हमारे युवा खिलाड़ी प्रेरणा ग्रहण कर सकें। इस वर्ष भी खेल दिवस के अवसर पर बिहार खेल रत्न सहित 312 खिलाड़ी और प्रशिक्षक सम्मानित किये गए। इनमें 136 महिला एवं 102 नि:शक्त खिलाड़ी भी शामिल थे। निश्चित रूप से यह सम्मान भविष्य में उन्हें बेहतर उपलब्धियों के लिए प्रेरित करता रहेगा और वे एक श्रेष्ठ खिलाड़ी ही नहीं, एक श्रेष्ठ नागरिक के रूप में भी राज्य एवं राष्ट्र की पहचान बना सकेंगे।

शुभकामनाओं के साथ!

(चंचल कुमार)
सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

● प्रेमचंद जयंती

प्रेमचंद की साधारणता को सम्मान

कला संस्कृति विभाग, बिहार सरकार एवं संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रेमचंद जयंती को लेकर कथा सम्राट को अलग-अलग नजरिए से देखने की कोशिश हुई। प्रेमचंद रंगाशाला में आयोजित दो दिवसीय प्रेमचंद जयंती समारोह का उद्घाटन करते हुए कला संस्कृति मंत्री विनय बिहारी ने कहा कि अमरकथा शिल्पी मुंशी प्रेमचंद की साहित्य रचना-कहानियां और उपन्यास कालजयी हैं। उनकी रचनाओं का क्षेत्र विस्तृत है। उनकी भाषा आम आदमी की भाषा है। प्रेमचंद की रचनाओं में हिन्दी, उर्दू के अलावा बहुसंख्य रूप में भोजपुरी का भी प्रयोग हुआ है। उन्होंने कहा कि 'पंच परमेश्वर' कहानी के कुछ संवाद तो ऐसे हैं जिसे व्यक्ति की दुनिया और जिंदगी बदल गयी। प्रेमचंद का समग्र साहित्य आज भी प्रासांगिक है। समारोह के मुख्य वक्ता बिहार विधान पार्षद डॉ रामवचन राय ने कहा कि प्रेमचंद की कहानियों में आदर्शवाद के साथ-साथ मध्यवर्ग की कुंठायें-त्रासदी और निराशायें भी मिलती हैं। उनका साहित्य आसपास के परिवेश से समाज को जोड़ता है।

डॉ रामवचन ने बिहार से जुड़े कई प्रसंगों की चर्चा करते हुए कहा कि प्रेमचंद 1931 में पटना विश्वविद्यालय के एक कार्यक्रम में भाग लेने पटना आये थे। उन्हें लेने के लिए कुछ विद्यार्थी पटना जंक्शन गये थे। लेकिन सामान्य वेशभूषा में रहे प्रेमचंद को विद्यार्थी पहचान न सके। अंततसरलता और सादगी की प्रतिमूर्ति प्रेमचंद ने पटना जंक्शन स्टेशन पर ही सोकर रात बितायी। प्रेमचंद पर लिखी पहली आलोचना पुस्तक बिहार के साहित्यकार जनार्दन प्रसाद झा द्विज ने लिखी थी। उनके उपन्यास 'कर्मभूमि' का प्रुफ और संपादन बिहार के ही आचार्य शिवपूजन सहाय ने किया था। इस तरह कई प्रसंगों और संदभरे में बिहार से प्रेमचंद का संबंध रहा है। श्री राय ने कहा कि मुंशी प्रेमचंद ने खादी बेची, स्कूल मास्टर रहे, अंग्रेजों के कोपभाजन के कारण नौकरी से मुअत्तल हुए और अंत में नौकरी भी छोड़नी पड़ी। प्रेमचंद पर आर्यसमाज आंदोलन का, गांधी दर्शन और प्रगतिशील युग का भी प्रभाव था। दो दिनों के इस कार्यक्रम के पहले दिन मुंशी प्रेमचंद की लिखी कहानी 'कफन' का मंचन हुआ। हज्जू म्यूजिकल थियेटर (एचएमटी) के कलाकारों ने कहानी के मूल भाव को और पुख्ता किया। कहानी के नाट्य रूपांतरण में आज के घटनाक्रम को भी जिन्दा रखा गया। सुरेश कुमार हज्जू की टीम के कलाकारों ने अपने प्रदर्शन से प्रेमचंद की कहानी के भाव को बखूबी दर्शकों तक पहुंचाया। नाटक में रोहित चंद्रा, रौशन कुमार, सिम्मी, मानसी, पूजा, शिल्पी, राहुल, कुंदन, रमेश, अजीत, रवि, मुकुंद, रणजीत, अनुज, रितेश, सुदर्शन और विकास ने भूमिका निभाई। जयंती उत्सव के दूसरे दिन नाटक और परिचर्चा के गहन विषयों में प्रेमचंद की मौजूदगी को सामयिक दौर में तलाशा गया। प्रेमचंद की लिखी कहानी 'सद्गति' और 'ठाकुर का कुँआ' को मिलाकर 'कला जागरण' के कलाकारों ने गुलाम भारत की सटीक तस्वीर को रंगशाला में जीवंत किया। 'काहे के शरीर अइसन दिहले विधाता, जेकरा के छुअले पर दुनिया घिनाता....' इन पंक्तियों के बोल ने तो मानो दलित जीवन की त्रासदी को फिर से नए संदर्भ में देखने की ओर इशारा किया। नाटक के पात्र झरखू, पंडित और ठाकुर के जरिए दलित स्वाभिमान को दबा देने की सामंती और पाखंड की गाथा लोगों को दिल छू गई। सहज व आसान भाषा में बोले संवाद प्रेमचंद की कहानी के अहसास को खास बनाए स्व अनिल ओझा के नाट्य रूपांतरण को सुमन कुमार ने अपने निर्देशन व परिकल्पना से गहरे अर्थ दिए। नाटक के बीच में खड़ी बोली, भोजपुरी के बोल से दर्शकों को कहानी बताने का तरीका अपने आप में खास रहा। नाटक के भावपूर्ण और अर्थपूर्ण दृश्य लोगों पर कई सवाल छोड़ गए। जमीन हड़पने के लिए ठाकुर द्वारा अपने ही भाई के पत्नी की हत्या और ठाकुर तथा पंडित के शोषण से झरखू की मौत ने कानून और समाज की रूढ़ियों पर भी चोट किया। नाटक के आखिर में निर्देशक सुमन कुमार ने सभी कलाकारों का परिचय कराया। साथ ही संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष ने सुमन कुमार को सम्मानित किया।

दूसरे दिन आयोजन की शुरूआत परिचर्चा से हुई। परिचर्चा में पटना विवि के प्रो० तरूण कुमार ने कहा कि अजादी के समय देशभक्ति के वास्तविक चरित्र को प्रेमचंद ने सामने लाने की भरपूर कोशिश की। उन्होंने गुलाम भारत में देशभक्ति के नाम पर चल रहे स्वार्थ के कारनामे से लोगों को रू-ब-रू कराया। साधारण और सहज भाव से साहित्य के जरिए समाज को समग्र रूप से लोगों के सामने लाना वाकई अपने आप में अद्भुत है। प्रो० कुमार ने प्रेमचंद व समकालीन समाज पर बोलते हुए कहा कि कथा सम्राट के रूप में प्रेमचंद की साधारणता असाधारण थी। उन्होंने कहा कि प्रेमचंद को अगर आज के आईने में देखा जाए तो समाज का ताना-बाना पहले से जटिल हुआ है। ऐसे में उनकी रचनाएं पहले के मुताबिक आज ज्यादा सही दिखती हैं। इसको प्रो० कुमार ने प्रेमचंद के कई उद्धरण से बताया।

प्रेमचंद और सिनेमा पर बात रखते हुए फिल्म समीक्षक विनोद अनुपम ने कहा कि प्रेमचंद के साथ भारतीय हिन्दी सिनेमा ने कोई सरोकार रखने की कोशिश नहीं की। छिटपुट फिल्मों को छोड़ दिया जाए तो प्रेमचंद की फिल्मों में दखल को जानबूझकर दूर किया गया। और दुर्भाग्य इस बात का है कि आज भी कोई फिल्मकार उनकी रचनाओं को फिल्मों का आधार नहीं बनाना चाहता है। ऐसा तब है जबकि उनकी तीन दर्जन कहानियां फिल्मों के लिए बेहतर पटकथा के रूप में हैं। अंत में बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष और कवि आलोक धन्वा ने कहा कि प्रेमचंद ने खड़ी बोली को विस्तार दिया। श्री धन्वा ने कहा कि प्रेमचंद ने ही खड़ी बोली को स्वतंत्रता संग्राम की भाषा बनाई। आखिर में आलोक धन्वा ने चिन्ता जाहिर की कि आज हम सिर्फ जयंती मनाने पर निर्भर हैं, लेकिन जरूरत प्रेमचंद और निराला जैसे रचनाकारों को आज के अर्थ में समझने की है। परिचर्चा का संचालन अनिश अंकुर ने किया। परिचर्चा में वरिष्ठ पत्रकार मणिकांत ठाकुर, नागेन्द्र सिंह के अलावा सैकड़ों कलाप्रेमी उपस्थित रहे।

–रवि शंकर सिंह

कला मंगल में दिखा शिल्प का जादू

सोते हुए बच्चे की मासूमियत हो या जागते हुए बच्चे की खिलखिलाहट, स्त्री शक्ति की अभिव्यक्ति हो या उसका रूदन हो, जीवन का संघर्ष हो या माँ और बच्चे का मधुर संबंध, ऐसे ही तमाम भाव देखने को मिले बिहार ललित कला अकादमी में । यहां कला मंगल श्रृंखला के तहत युवा कलाकारों की कलाकृतियों की समूह प्रदर्शनी का शुभारंभ हुआ । बहुद्देशीय सांस्कृतिक परिसर स्थित बिहार ललित कला अकादमी में इस प्रदर्शनी के प्रथम दर्शक आनंदी प्रसाद बादल, अध्यक्ष, बिहार ललित कला अकादमी थे। भाग लेने वाले कलाकारों में ममता केशरी (दानापुर कैंट), मनीष कुमार (नयी दिल्ली), मनोज कुमार गुप्ता (इलाहाबाद), सनातन मंडल (मालदा, पश्चिम बंगाल), मुकेश कुमार कर्ण (मुजफ्फरपुर), भरत कुमार (शेखपुरा, पटना) एवं दीपक कुमार (खगौल, पटना) थे। इस प्रदर्शनी कलाकृति अद्‌भुत थी कई कलाकृतियाँ तो ऐसी थी, मानो वह अभी बोल उठेगी मनीष कुमार की हर कलाकृति का शीर्षक चार्ज एवं रेसीडेंसी थी। इनमें उपयोग की गयी सामग्री फाइबर ग्लास थी, मनीष को स्कल्पचर में गोल्ड मेडल भी मिल चुका है । पटना के अलावा इन्होंने दिल्ली में आयोजित एग्जिबिशन में भी हिस्सा लिया है। दीपक कुमार द्वारा बनायी गयी कलाकृति का शीर्षक ग्लोबल वार्मिंग एवं आदिवासी हैं। दिखायी गयी कलाकृति उन्होंने एक मित्र को सामने खड़े रख कर बनायी है ।

प्रदर्शनी में दीपक द्वारा बनायी गयी यह मूर्ति आकर्षण का केन्द्र है । सभी इसके साथ एक फोटो जरूर खिंचवाते हैं । मुकेश कुमार कर्ण द्वारा बनायी गयी खूबसूरत कलाकृतियों का शीर्षक 'शोषण एवं डिस्टॉरशन' हैं, जिसमें इन्होंने टेराकोटा का उपयोग किया है। उपरोक्त कलाकृति शोषण थीम की है ।

मनोज कुमार गुप्ता द्वारा बनायी गयी कलाकृति का शीर्षक स्ट्रगलर, बंजारन, शोर एवं भील पर आधारित है। उपयोग की गयी सामग्री फाइबर ग्लास एवं टेराकोटा है। ममता केशरी की कलाकृति का शीर्षक सोन चिड़िया एवं जर्नी है । फाइबर ग्लास, लकड़ी से उन्होंने ये बनायी हैं । इसमें जंजीरों में बंधी दुखी सोन चिड़िया को दर्शाया गया है। भरत कुमार द्वारा बनायी गयी कलाकृति का शीर्षक 'बचपन, आकर्षण एवं मदर-चाइल्ड' है । इसमें उपयोग की गयी सामग्री पत्थर, फाइबर ग्लास है। सनातन मंडल द्वारा बनायी गयी कलाकृति का शीर्षक प्रजापति दक्ष, बंगाल का काठ घोड़ा, नारी शक्ति, श्रवणी, मूषक राज, मातृत्व एवं उल्लू रानी हैं, जिसमें उपयोग सामग्री पत्थर एवं टेराकोटा है ।

- अंजलि गुप्ता

ग्रामीण खिलाड़ियों को हर स

बिहार के गांवों में खेल प्रतिभाएं भरी पड़ी हैं लेकिन उनका विकास उस तरह से नहीं हो रहा है। ऐसे में बिहार के मुख्यमंत्री की ओर से कला-संस्कृति व खेल मंत्री विनय बिहारी को ग्रामीण स्तर पर खिलाड़ियों को सुविधाएं उपलब्ध कराने का निर्देश देना मायने रखता है। हर पंचायत में स्टेडियम के निमार्ण का निर्देश उन्होंने दिया। खेल मंत्री खुद खेल प्रेमी रहे हैं। इसलिए अब ये उम्मीद की जानी चाहिए कि बिहार के दिन खेल के मामले में चमकने वाले हैं। ये निर्देश मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद की स्मृति में आयोजित खेल दिवस के मौके पर श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल, पटना में आयोजित भव्य आयोजन में दिए। हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद के चित्र पर पुष्प अर्पित व दीप प्रज्वलित कर समारोह का उद्घाटन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार खेल को प्रोत्साहित और खिलाड़ियों को उत्साहित करने के लिए कटिबद्ध है। इस वर्ष खेल को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार की ओर से 416 करोड़ से ज्यादा का बजट पास किया गया है। उन्होंने कहा कि जीवन जीने की कला खेल ही सिखाता है और एक अच्छा खिलाड़ी ही अच्छा नागरिक बन सकता है। प्रदेश में जनसंख्या के आधार पर देखा जाए तो अब भी कम खिलाड़ी निकल रहे हैं। यह संख्या बढ़नी चाहिए। मांझी ने कहा कि सरकार हर खेल को सूचीबद्ध करेगी। उचित पात्रता वाले सभी खिलाड़ियों को सरकारी नौकरी दी जाएगी। जिस तरह राज्य सरकार गरीबों की झोपड़ी में विकास की रोशनी फैलाने के लिए काम कर रही है, उसी तरह सरकार गरीब खिलाड़ियों की सेहत सुधारने की भी पुरजोर कोशिश करेगी। राष्ट्रीय खेल दिवस का मौका इसलिए भी खास बना कि श्री कृष्ण मेमोरियल हॉल में बिहार की खेल प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। कॉमनवेल्थ गेम में बिहार का मान सूटिंग में बढ़ाने वाली श्रेयसी सिंह को भी 11 लाख रुपए का सम्मान देने की घोषणा हुई। कला संस्कृति और युवा विभाग एवं बिहार राज्य खेल प्राधिकरण की ओर से आयोजित खेल दिवस कार्यक्रम में विभिन्न खेलों से जुड़े 312 खेल प्रतिभाओं को मुख्यमंत्री जीतनराम मांझी और कला संस्कृति मंत्री विनय बिहारी ने सम्मनित किया। बेगूसराय के निवासी सिक्किम कैडर के आईएएस अधिकारी रवीन्द्र कुमार को उनके साहस के लिए सलाम किया गया। उन्हें मेडल, प्रशस्ति पत्र, प्रमाण पत्र और एक लाख का चेक दिया गया। मई 2013 में माउंट एवरेस्ट को फतह करने के लिए विशेष खेल सम्मान से नवाजा गया। उनके आलावा शैलेन्द्र सिंह मलय (एथलेटिक्स), सौरभ आनंद (शतरंज), अनिशा, तारा खातून और अर्चना कुमारी (तीनों फुटबॉल), अमन राज (गोल्फ), पूजा कुमारी और विपुल कुमार (लाइक्वांडो), निशक्त श्रेणी के

महिला खेल प्रतियोगिता

खेल	अक्टूबर में	स्थान
कबड्डी	17-19	पूर्णियाँ
हॉकी	17-19	पूर्णियाँ
बैडमिंटन	17-19	पूर्णियाँ
एथलेटिक्स	19-21	पटना
बास्केटबॉल	9-21	पटना
लॉन टेनिस	19-21	पटना
वालीबॉल	9-21	पटना
खो-खो	8-10	मुजफ्फरपुर
टेबल टेनिस	8-10	मुजफ्फरपुर
हैंडबॉल	8-10	मुजफ्फरपुर

ंभव मदद देगी बिहार सरकार

खिलाड़ियों मानसी, धीरज कुमार, सोनू प्रशांत, शिशिर कुमार, सूरज कुमार (सभी एथेलटिक्स), अरुण कुमार गुप्ता व उमेश विक्रम कुमार (बैडमिंटन), नेहा कुमारी, राजीव कुमार गिरि, राजकुमार शर्मा (बास्केटबॉल) और मधु जयसवाल (लॉन टेनिस) को पुरस्कार प्रदान किया गया। प्रशिक्षकों में राजीव लोचन (एथलेटिक्स), चंदन कुमार सिंह (तीरंदाजी), देवाशीष बनर्जी (बॉस्केट बॉल), जय प्रकाश मेहता (ताइक्वांडो) और राम चरण सिंह (कुश्ती) को सम्मानित किया गया। इसके अलावे और भी की खिलाडियों को सम्मानित किया गया। जमुई के रहनेवाले इंटरनेशनल एथलेटिक्स शैलेन्द्र कुमार को एक लाख रुपये और प्रशस्ति पत्र दिया गया। पटना की रहने वाली नि:शक्त कोटि की खिलाड़ी मानसी को 11 हजार रुपये का सम्मान दिया गया।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने मंत्री विनय बिहारी की उपस्थिति में कहा कि वे प्रस्ताव लेकर आएं। हम कार्य करने के लिए तैयार हैं। खेलों को आगे ले जाने और लगातार विकास के लिए जितनी राशि की जरूरत होगी, सरकार की ओर से उपलब्ध करायी जाएगी। उन्होंने कहा कि खेल सम्मान पाने वालों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। हालांकि 11 करोड़ की आबादी के अनुपात में यह कम है। पुरस्कार की संख्या बढ़ेगी। कहा कि हमने तय किया है कि हर प्रखंड में स्टेडियम बनाएंगे। ग्राम पंचायतों में भी स्टेडियम बनेगा। खेल, खिलाडियों को आगे बढ़ाने के लिए राशि की कमी नहीं है। 2015 में पटना के मोइनुल हक स्टेडियम में अंतराष्ट्रीय क्रिकेट मैंच हो, इसका प्रस्ताव लेकर आएं। सूबे की सरकार प्रशासनिक व्यवस्था और राशि देगी।

खेल मंत्री विनय बिहारी ने सरकारी नौकरी के लिए खिलाड़ियों को चक्कर लगाने से मुक्ति की मांग की। बदहाल स्टेडियमों, खासकर महिला फुटबॉलरों के लिए एकमात्र स्टेडियम की खास्ता हालत की ओर ध्यान आकृष्ट किया। रणजी ट्रॉफी का मैच करा पाने की अक्षमता की बात की एनसीसी व स्काउट की खराब स्थिति और आठ सालों से बंद फिजिकल ट्रेनिंग कॉलेज का मुद्दा मुख्यमंत्री का सामने रखा। समारोह में कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव चंचल कुमार, महानिदेशक बिहार राज्य खेल प्राधिकरण कुमार राजेश चन्द्रा, खेल निदेशक अरविन्द ठाकुर, विभाग के संयुक्त सचिव सुबोध कुमार चौधरी, संस्कृति निदेशक के. डी. प्रौज्ज्वल आदि पदाधिकारी उपस्थित थे। समारोह का संचालन सोमा चक्रवर्ती ने किया।

खेल दिवस के मौके पर विभाग द्वारा खेल कैलेंडर भी जारी किया गया। इस बार कैलेंडर में 30 खेलों को रखा गया है।

– आशा कुमारी

राजीव गाँधी खेल अभियान कार्यक्रम

खेल	नवम्बर में	स्थान
एथलेटिक्स	5-8	सहरसा
कुश्ती	5-8	सहरसा
बैडमिंटन	13-16	खगड़िया
ताइक्वांडो	13-16	गया
हैंडबॉल	20-23	नवादा
फुटबॉल	20-23	रोहतास
वालीबॉल	25-28	भागलपुर
भारोत्तोलन	25-28	नालन्दा
खो-खो	25-28	नालन्दा
कबड्डी	1-4	समस्तीपुर

● रंग जलसा

हीरा डोम की कथा हुई साकार

शहर की रंग संस्था निर्माण कला मंच ने कालिदास रंगालय में पिछले दिनों रंग जलसा का आयोजन किया। उन दिनों जो भी कालिदास रंगालय गये, उन्हें वहां का माहौल किसी उत्सव से कम नहीं लगा। 20 से 23 अगस्त तक होनेवाले इस नाट्योत्सव में जाति धर्म और इंसानी पहलुओं की सच्चाई को काफी करीब से दिखाया गया। इस नाट्योत्सव को कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार के सहयोग से करवाया गया। पहले दिन 'हीरा डोम' नाटक का मंचन हुआ। दूसरे दिन 'हयवदन', तीसरे दिन 'लहरों के राजहंस' और चौथे दिन 'नटमेठिया' नाटक का मंचन हुआ।

नाटक नीच जाति के ऊपर बना था। लोग नीच जाति को काफी हीन भावना से देखते हैं। प्रशासन भी उन्हें गाली-गलौज के साथ संबोधित करते हैं। 'हीरा डोम' नाटक में डोम का दर्द दिखा। इस नाटक को भोजपुरी और हिन्दी भाषा में प्रदर्शित किया गया। इसके कई दृश्यों में भरपूर हास्य भी था। जो लोगों को लोट-पोट करने के लिए काफी था। 1977-78 में ठकैता डोम पुलिस के हाथों क्रूरता से मारा गया था। ठकैता कलाकार था। वह हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' का सस्वर पाठ करता था। यही सूत्र पकड़कर नाटक 'हीरा डोम' बनाया गया है। उषा किरण खान के इस आलेख को संजय उपाध्याय ने अपने निर्देशन से सजाया है। पूरे नाटक में नेटुआ दल ने भी लोगों को बहुत मनोरंजन किया। इस नाटक में अभिषेक शर्मा, राजू मिश्र, रूबी खातून, शारदा सिंह, पप्पू ठाकुर, स्वरम उपाध्याय ने बेहतर अभिनय किया।

रंग जलसा के दूसरे दिन हयवदन नाटक की प्रस्तुति हुई। अपना-अपना भाग्य, अपनी-अपनी अपूर्णता। अपूर्णता ही लालसा का कारण भी बनती है। कुछ ऐसी ही कहानी है 'हयवदन' की। अनहद पटना रंग संस्था ने इस नाटक का मंचन किया। नाटक में दो दोस्त और एक लड़की है। लड़की एक को पसंद आयी तो दूसरा भी प्रेम में पड़ गया। दूसरे को जब लड़की ने पसंद किया, तो पहले ने अपनी बलि दे दी। पहले दोस्त ने बलि दी, तो दूसरा दोस्त अपने दोस्त के गम में अपनी भी बलि दे बैठा। लड़की की लालसा के कारण दोनों को अपने प्राण गंवाने पड़े। जी हां, कहानी कुछ ऐसे ही लालसा से भरे लोगों की फितरत पर आधारित थी।

नाटक में पहले तो दोनों दोस्त कपिल और देवदत्त अपने प्राण की आहुति देते हैं, जब लड़की 'पद्मिनी' यह देखती है कि उसका पति देवदत्त और उसका दोस्त कपिल दोनों के प्राण चले गये हैं, तो वह काली मां से उन्हें जिंदा करने की मांग करती है। उसकी तपस्या के कारण काली मां पद्मिनी को कहती है कि दोनों सिर को उसके धर में लगा दो, वे दोनों जिंदा हो जायेंगे। दोनो के सिर तो जुड़ गये, लेकिन एक-दूसरे के धर पर। अब जो देवदत्त था, वह कपिल बन गया। पद्मिनी किसकी होगी इस बात के झगड़े में दोनों के प्राण दुबारा चले जाते हैं। इसे देख कर

पद्मिनी भी अपने प्राण वहीं त्याग देती है। इस कहानी ने लोगों को मैसेज दिया कि इंसान अपनी लालसा को कभी कम नहीं कर पाता है। यह लालसा हमेशा बढ़ती ही रहती है। लेखक गिरीश करनाड के आलेख पर राजू मिश्र ने नाटक का निर्देशन किया। नाटक में विवेकानन्द मिश्र, राजू मिश्र के संवाद की काफी तारीफ की गयी। नाटक में संतोष मेहरा, राहुल कुमार, कुमार स्पर्श, अभिषेक चौहान, विवेकानन्द मिश्र, सिमी घोष, राजू मिश्र, तन्नू प्रकाश, कुमार स्नेह, कृष ने बेहतरीन अभिनय किया।

तीसरे दिन 'लहरों के राजहंस' का मंचन प्रस्तुति संस्था द्वारा किया गया। 'लहरों के राजहंस' मोहन राकेश के नाटकों के मील का एक सशक्त पत्थर है। यह नाटक क्रोध, सनक और उन्माद को दर्शाता है। नाटक मे एक सुन्दरी है। जिसे अपने रूप-गुण पर बहुत विश्वास है। यह नाटक एक प्रश्न छोड़ जाता है कि क्या वास्तव में हम उसे ठीक से जानते हैं, जिन्हें जानने का दावा करते हैं, और क्या हम आपने आपको ठीक से जानते हैं? इस नाटक का निर्देशन शारदा सिंह ने किया। मुख्य कलाकार थी शारदा सिंह, सुमन कुमार, स्वरम् उपाध्याय , विवेक कुमार, कुमार उदय सिंह, विनीता सिंह सभी कलाकारों को अभिनय काबिलेतारीफ था।

चौथे दिन का नाटक 'नटमेठिया' था। भिखारी ठाकुर की जीवनी। बचपन से लेकर जवानी तक और जवानी से लेकर उनके फेमस लौंडा डांस तक की कहानी है इस नाटक में नाटक के सामने बैठे दर्शक देखते हैं कि एकाएक कोई भी भिखारी ठाकुर की भूमिका ले रहा है। अचानक से कपड़े बदल रहे हैं। किरदार भी बदल रहा है। अलग-अलग तरह के सामान मंच पर आ रहे हैं। कभी पूजा की सामग्री, तो कभी नाई का सामान, सभी जानने को उत्सुक थे कि कैसे सारे कलाकार अचानक से कपड़े बदलकर आ-जा रहे हैं, जबकि उन्हें ज्यादा वक्त भी नहीं मिल रहा है। नाटक में भिखारी ठाकुर की कहानी को बखूबी दिखाया गया। नाटक देखने आये दर्शक नाटक की तारीफ करते नहीं थक रहे थे। कुछ ने तो यहां तक कहा कि आज पहली बार भिखारी ठाकुर की कहानी को जाना।

पुंज प्रकाश द्वारा लिखित इस नाटक को रागा रंगमंडल के रंधीर कुमार ने निर्देशित किया। नाटक 'नटमेठिया' भिखारी ठाकुर के माध्यम से कला-कलाकार व समाज के बीच व्याप्त द्वन्द व संघर्ष की एक व्यवहारिक गाथा बताती है।

नाटक में सुनील बिहारी, मनीष महिवाल, अजीत कुमार, बुल्लू कुमार, आशुतोष, रवि महादेवन, उदय, रवि कौशिक, रवि, शिल्पा भारती, निखिल और आकाश ने बेहतरीन अभिनय किया। जबकि भूपेन्द्र कुमार, मारकडेय पाण्डेय, गुंजन कुमार ने बैक स्टेज सपोर्ट किया।

- मोईन आजाद

थियेटरवाला की स्मृति में नाट्योत्सव

अजित गांगुली उर्फ अजित भाई थियेटरवाला की पहली पुण्य तिथि पर दो दिवसीय नाट्य मंचन पटना की नवगठित नाट्य-इकाई 'रंग-मार्च' द्वारा बिहार आर्ट थियेटर के सहयोग से आयोजित की गई । अजित गांगुली चार दशकों तक बिहार रंगमंच को समर्पित और बिहार आर्ट थियेटर के स्तंभ रहे थे । उनकी स्मृति में इस वर्ष से बिहार का एक युवा रंगकर्मी जो रंगकर्म को पूरी तरह समर्पित रहा हो 'थियेटरवाला युवा सम्मान' से 'रंग-मार्च' द्वारा सम्मानित किया जायेगा । 'रंग-मार्च' अजित गांगुली के छात्रों का संगठन है और यह आयोजन उनके प्रति श्रद्धा और एक संगठित प्रयास ।

प्रतिष्ठित रंग-निर्देशक परवेज अख़्तर और बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष श्री आलोक धन्वा ने दीप प्रज्जवलित कर इस आयोजन का उद्घाटन किया । साथ हीं वरीष्ठ रंगकर्मी सुमन कुमार, अमियोनाथ चटर्जी, अरुण कुमार सिन्हा, प्रदीप गांगुली, गुप्तेश्वर कुमार, बीरेन्द्र कुमार, मनीष महिवाल, पुंज प्रकाश, अजित कुमार, भूपेन्द्र कुमार, राजेश राजा, मो० जहाँगीर, सुनील बिहारी, उमेश श्रीवास्तव सहित पटना के तमाम रंगकर्म समुदाय मौजूद था । उद्घाटन के पश्चात् परवेज अख़्तर और आलोक धन्वा ने पटना में लगातार अच्छा रंगकर्म कर रहे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से प्रशिक्षित रंग-निर्देशक रणधीर कुमार को प्रथम 'थियेटरवाला युवा सम्मान' से सम्मानित किया।

आयोजक 'रंग-मार्च' की ओर से अमियोनाथ चटर्जी और अरुण कुमार सिन्हा की ओर से स्मृति चिन्ह देकर परवेज अख़्तर और आलोक धन्वा को सम्मानित किया गया। अपने वक्तव्य में सभी अतिथियों ने अजित गांगुली के संग अपनी स्मृतियों को याद किया और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित किया । मंच संचालन आयोजन के संयोजक मृत्युंजय शर्मा ने किया ।

इस दो दिवसीय आयोजन पटना की नवगठित नाट्य-इकाई 'रंग-मार्च' द्वारा कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर की दो कहानियों 'अनाथ' और 'गूंगी' का मंचन मृत्युंजय शर्मा के निर्देशन में किया गया ।

कालिदास रंगालय में नाट्योत्सव के उद्घाटन और सम्मान समारोह के बाद टैगोर की कहानी 'अनाथ' का मंचन किया गया । इस कहानी का नाट्य-रूपांतरण नूपुर चक्रवर्ती ने किया और निर्देशन मृत्युंजय शर्मा ने । शशिकला अपने नवजात छोटे भाई नीलमणि के साथ अपने घर में रहती है । इस नवजात का अपनी दीदी के अलावे और कोई नहीं है । शशिकला का पति जयगोपाल उसी घर में अपने ससुर के अनुरोध पर कि इस सारी संपत्ति का वही उत्तराधिकारी है, घरजमाई बनकर रहता है । नीलमणि के जन्म के पश्चात् सारी संपत्ति का उत्तराधिकारी नीलमणि का हो जाना, शशिकला का नीलमणि के प्रति अपार प्रेम जयगोपाल के स्वाभिमानी मन को हीनता-दीनता के ऐसे गर्त में लेकर चला जाता है कि उसके मन में स्वार्थ और प्रतिशोध की ज्वाला धधक उठती है । इस प्रतिशोध में जयगोपाल नीलमणि को कई बार मारने की कोशिश करता है और उसकी सारी संपत्ति अपने नाम कर लेता है । शशिकला का अब एकमात्र उद्देश्य है अपने भाई नीलमणि का हक अपने पति से उसे वापस दिलाना । अंततः नीलमणि अपना हक पाने में कामयाब हो जाता है, लेकिन इस लड़ाई में वह अपनी प्यारी दीदी शशिकला को खो देता है । उसके अनाथ होने के एहसास की गाथा है कविगुरू की यह संवेदनशील कहानी 'अनाथ' ।

शांतनु पंडित, नूपुर चक्रवती, राजन कुमार सिंह, पियूष कुमार, दीपक कुमार, अमित श्रीवास्तव, सरिता शर्मा एवं पुष्पा कुमारी ने विभिन्न पात्रों को मंच पर जीवंत किया ।

नाट्योत्सव के दूसरे और अंतिम दिन टैगोर की एक और कहानी 'गूंगी' का मंचन किया गया । इसका नाट्य-रूपांतरण और निर्देशन किया मृत्युंजय शर्मा ने। रूप-गुण से परिपूर्ण होने के बावजूद जुबान से गूंगी सुभाषिणी नदी किनारे अपने बचपन के दोस्त प्रताप के साथ अपनी जिन्दगी जीने की कोशिश करती है । उसके माता-पिता उसकी शादी को लेकर बेहद चिंतित हैं। एक दिन संयोगवश निलेश बाबू सुभाषिणी से प्रभावित होकर उसे अपने घर की बहू बना लेने का फैसला करते हैं । शादी सम्पन्न हो जाती है लेकिन ससुराल में गूंगी का भेद खुलते हीं मानो उस बेवस लड़की पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है और निलेश बाबू पश्चाताप की अग्नि में जलते रहते हैं । यह नाटक बेहद प्रासंगिक सवाल उठाता है कि आज भी तो ससुराल में लड़कियों के साथ ऐसा हीं सलूक किया जाता है, बस लड़की की खामी गूंगी न होकर और कुछ हो जाता है ।

नूपुर चक्रवर्ती, राजन कुमार सिंह, कुणाल कौशल, सरिता शर्मा, अमित श्रीवास्तव, पियुष कुमार, पुष्पा कुमारी, नीरज कुमार सिंह, दीपक कुमार, शांति प्रिया, रानू कुमार, श्रेया शर्मा एवं नितिश कुमार ।

सम्मान समिति के सदस्यों में कुमार अनुपम, प्रदीप गांगुली, नूपुर चक्रवर्ती, राजन कुमार सिंह और मृत्युंजय शर्मा । बिहार आर्ट थियेटर के महासचिव कुमार अनुपम ने अजित की स्मृति में आयोजित इस आयोजन को हर वर्ष करने का संकल्प लिया और इसे पाँच दिवसीय करने की घोषणा किया । इस आयोजन के संयोजक मृत्युंजय शर्मा ने अगले वर्ष इस आयोजन को राज्यव्यापी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के नाटकों के मंचन की बात कही । इसके पश्चात् प्रतिभागी कलाकारों को प्रमाण-पत्र दिया गया और आयोजन के समाप्ति की घोषणा की गई ।

स्मृतिः गोपाल सिंह नेपाली

इतिहास बदलने वाले कवि

शंकर की पुरी चीन ने सेना को उतारा/चालीस करोड़ों को हिमालय ने पुकारा, हो जाये पराधीन नहीं गंगा की धारा/गंगा के किनारों को शिवालय ने पुकारा... गोपाल सिंह नेपाली की कविता 'हिमालय ने पुकारा' को बेहतर तरीके से किलकारी के बाल-कलाकार ने गीत के रूप में प्रस्तुत किया।

इस गीत ने हॉल में बैठे श्रोताओं को गद्गद कर दिया और कवि गोपाल सिंह नेपाली की अनेक कविताओं को लोगों को याद दिला दिया। इसके साथ ही बच्चों ने लगातार दूसरी प्रस्तुति 'हम धरती क्या आकाश बदलने वाले हैं, हम तो कवि हैं, इतिहास बदलने वाले हैं,' से कार्यक्रम में चार चांद लाग दिये। मौका था सोमवार को प्रेमचंद रंगशाला में कविवर गोपाल सिंह नेपाली की 103वीं जयंती सह सम्मान समारोह का। इसका आयोजन गोपाल सिंह नेपाली फाउण्डेशन व बिहार संगीत नाटक एकेडमी द्वारा किया गया था।

कार्यक्रम के उद्घाटन करने के लिए कला संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विनय बिहारी मौजूद थे। उन्होंने कहा कि मैं नेपाली जी के धारती से ही आया हूँ। बचपन से पढ़ता आया हूँ और आज यहां मैं श्रोता के रूप में आया हूँ। बहुत कुछ अनुभव सुनकर मिलता है। नेपाली जी के लिए जिस रूप से सहायता चाहिए, मिलेगी। हमारा प्रयास रहेगा कि इस तरह के कार्यक्रम व गोष्ठी बड़े पैमाने पर कराया जाये। इसके लिए

तन-मन-धान से मैं प्रयास करूँगा।

नेपाली सम्मान प्रत्येक वर्ष दो विशिष्ट व्यक्तिव को दिया जाता है। इस बार यह सम्मान लोक गायिका शारदा सिन्हा व साहित्यकार प्रो. सतीश राय को प्रदान किया गया है।

वहीं किलकारी के बाल कलाकार आर्यन, पप्पू, मो. अल्लाउद्दीन, रोहित, नीति शेखर, स्वीटि, सोनम, अपूर्वा, नीधि, मीनाक्षी को भी सम्मान-पत्र एवं स्मृति चिन्ह दिया गया। वहीं डॉ. सविता सिंह नेपाली ने कविवर के गीतों की संगीत प्रस्तुति दी। वहीं पं. जगत नारायण पाठक ने भी इनके गीतों को गाया। बरखा ऋतु के आगमन पर सविता नेपाली व बालिकाकओं ने 'झकझोर पड़े बदरवा राते के रात, रामा राते के रात..., की खूबसूरत प्रस्तुति दी। सभी ने इस प्रस्तुति को बहुत सराहा। भरपूर तालियों से बच्चियों को उत्साहवर्धन किया।

मौके पर मुख्य अतिथि डॉ. पूर्णिमा सिंह, नेपाली फाउण्डेशन के अध्यक्ष शैलेन्द्र प्रताप सिंह, आलोक धन्वा, सुधीर सिंह, डॉ. उत्तम सिंह, डॉ. अरुणोदय, नीतू कुमारी नूतन ने भी अपनी बात रखी और कहा कि गोपाल सिंह नेपाली बिहार के गौरव और चम्पारण के सपूत थे।

संग्रहालय बनेगा एनिमल फार्म के लेखक का घर

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विनय बिहारी ने पूर्वी चंपारण जिला स्थित प्रसिद्ध लेखक जार्ज ऑरवेल की जन्मस्थली के जीर्णोद्धार कार्य का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए सरकार कृतसंकल्पित है। इसके तहत सरकार विभिन्न कला विधाओं के लिए प्रशिक्षण केन्द्र भी खोलने जा रही है। उन्होंने कहा कि सरकार ऐतिहासिक स्थानों के उन्नयन की दिशा में कार्य कर रही है। इस कार्य में आने वाले हर खर्च बिहार सरकार का कला संस्कृति विभाग वहन करेगा। इस अवसर पर जिलाधिकारी अभय कुमार सिंह ने कहा कि जिले के सभी ऐतिहासिक एवं पारंपरिक स्थलों के जीर्णोद्धार का प्रस्ताव है। जल्द ही सभी स्थलों पर कार्य की शुरूआत होगी। समारोह में कला संस्कृति एवं युवा विभाग के सचिव चंचल कुमार, बिहार राज्य भवन निर्माण निगम के प्रबंध निदेशक गंगा कुमार सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

'एनिमल फार्म' और 'नाइनटीन एटी फोर' जैसे चर्चित उपन्यास के लेखक जार्ज ऑवेरल का पूर्वी चंपारण जिला मुख्यालय मोतिहारी में 25 जून 1903 को जन्म हुआ था। ऑरवेल के पिता आर डब्लू ब्लेयर बिहार सिविल सेवा के अफीम विभाग में कार्यरत थे। ऑरवेल जब एक साल थे तभी उनका परिवार इंगलैंड लौट गया था और उनका यहां मौजूद मकान आज जीर्ण-शीर्ण हो गया है। ऑरवेल के मकान की पुरानी संरचना को कायम रखने और वहां जलापूर्ति, कैफीटेरिया, अंदरूनी और बाहरी बिजली साज-सज्जा के लिए जीर्णोद्धार राशि के तौर पर 59.5 लाख रुपये खर्च किए जाएंगे। ऑरवेल की स्मृतियों को संरक्षित करने के लिए उनकी जन्मस्थली परिसर में संग्रहालय का निर्माण किया जाएगा। उन्होंने बताया कि ऑरवेल की जन्मस्थली एक अंतराष्ट्रीय स्मारक के तौर पर विकसित करने के लिए आने वाले चरण में और भी राशि का प्रावधान किया जाएगा। तकरीबन 2.48 एकड़ में फैले ऑरवेल की जन्मस्थली का जीर्णोद्धार कार्य भवन निर्माण विभाग द्वारा कराया जा रहा है। चंपारण जिले से राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के सत्याग्रह आंदोलन की शुरूआत की याद में स्मरणीय बनाने के लिए उसके नजदीक में 2.5 एकड़ में एक सत्याग्रह पार्क विकसित किया जाएगा। तीन वर्ष पूर्व बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने ऑरवेल की जन्मस्थली की अनदेखी पर नाराजगी जताते हुए जीर्णोद्धार के लिए योजना तैयार करने को कहा था। ऑरवेल की जन्मस्थली वर्तमान में राज्य का संरक्षित स्मारक है।

साकार हुई सांस्कृतिक एकता

पूर्वोत्तर भारत के मिट्टी की सोंधी महक पूर्वी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र कोलकाता तथा कला संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार सरकार के संयुक्त प्रयास से पटना के प्रेमचंद रंगशाला में लगातार तीन दिनों तक

दिनांक 02-08-2014 से 04-08-2014 तक बिखरती रही और बिहार के सुधीजन इस आनंद सरिता में गोते लगाते रहे। इस प्रतिभा उत्सव में बिहार के साथ-साथ उड़ीसा, मणिपुर, असम, सिक्किम, त्रिपुरा एवं पश्चिम बंगाल सहित नौ राज्यों के 20 (बीस) कलाकारों ने अपनी गायन, वादन एवं नृत्यों की सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुतियाँ दीं।

प्रथम दिन के रंगारंग कार्यक्रम में मणिपुरी, ओडिषी, कत्थक लोक नृत्य, सरायकेला छउ तथा भोजपुरी गीतों की प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम की शुरूआत संजीता देवी ने मणिपुरी नृत्य से की जिसमें उन्होंने अपने नृत्य के दौरान भगवान विष्णु के दशावतार रूप को दिखाया। इन्हें बिहार के चित्रकार श्याम शर्मा ने स्मृति चिन्ह तथा प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। उड़ीसा से आई नृत्यांगना श्री राधा पॉल ने ओडिशी नृत्य के प्रदर्शन के दौरान भगवान शिव के तांडव नृत्य की अद्भुत प्रस्तुति दी। मणिपुर में अपने राज्य को विपत्तियों से बचाने के लिए वहां के ग्रामीण थगोल जगोई नृत्य करते हैं। इस नृत्य की सुन्दर प्रस्तुति मणिपुरी नृत्यांगना चिगंगवम थजामन्वी देवी ने दी जिसे देखकर दर्शन आत्म विभोर हो गए और परिवेश तथा महौल बिल्कुल मणिपुरी हो गया।

बिहार की जानी-मानी कत्थक नृत्यांगना नीलम चौधरी की शिष्य संस्कृति सुमन ने ठुमरी "आन मिलो सजना रे आन मिलो, अंखियों में ना आए निंदिया, मोहे ना भाये काजल बिंदिया, सुना पड़ा अंगना" पर अपनी प्रस्तुति से सभागार को स्वत:स्फूर्त ढंग से अपनी अदाओं में तथा घुंघरु की खनक से बाँध लिया। ओम नम: शिवाय से शुरू हुआ संस्कृति सुमन का नृत्य अंतत: ठुमरी तक पहुंचा और इन्हें बिहार संगीत नाटक अकादमी के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध कवि श्री आलोक धन्वा ने स्मृति चिन्ह एवं प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया।

दूसरे दिन असम, पं०बंगाल, ओडिशा और त्रिपुरा के कलाकारों ने अपनी मनमोहक प्रस्तुतियों से रंगशाला की फिजा को रंगीन किया। कार्यक्रम की शुरूआत असम की थुलंगापुरी नृत्य से हुई। इस नृत्य प्रस्तुति में नर्तकी विक्रम थकलारी कभी स्वयं फूल बनती और कभी मोरनी।

इसके बाद असम के कलाकारों द्वारा ही रण संतरी नृत्य पेश किया। नृत्य के जरिए उन्होंने रण के दृश्यों को मंच पर जीवंत कर दिया। बांसुरी की तान पर नर्तक तलवार की धार से लड़ते दिखे। कोलकाता की देवी श्री मजौलिया ने भरतनाट्यम नृत्य के जरिए अपनी प्रस्तुति की। नृत्य के जरिए गणेश महिमा का बखान किया गया। इसके बाद माथे पर लाल पगड़ी और पारम्परिक सुनहरी धोती में त्रिपुरा के सूर्यजीत वर्मन ने अपने नृत्य के जरिए प्रसिद्ध कवि जयदेव के गीतों पर विष्णु के दशावतार रूप को प्रदर्शित किया। इसके पश्चात् ओड़िशा का प्रसिद्ध संबलपुरी नृत्य सुजाता नायक एवं सुमेधा सेन गुप्ता ने प्रस्तुत किया जिसमें आदिवासी संस्कृति की आदिम महक शामिल थी।

प्रतिभा उत्सव के तीसरे दिन प्रेमचंद रंगशाला में पश्चिम बंगाल, सिक्किम, ओडिशा, त्रिपुरा, मणिपुर, झारखण्ड एवं बिहार की प्रस्तुतियों का जलवा रहा। इस कार्यक्रम की शुरूआत सिक्किम से आये युवा लोक गायक मिचमा शेरिंग लेप्चा के गीतों से हुई जिसमें उन्होंने प्रकृति और मानवों के बीच के अंतर्संबंध को दिखलाया। सिक्किम के लोग अपनी प्रकृति और परम्पराओं से बहुत प्यार करते हैं और इसे बनाये रखने का हर संभव प्रयास करते हैं। झारखण्ड से पटना आई प्रसिद्ध गायिका मृणालिनी अखौरी ने अपने कजरी से रंगशाला में बादल बरसा दिये। उपस्थित दर्शक 'अईल रे बदरिया सजनवा घर ना हो' पर झूमते दिखे। उत्साहवर्धन के लिए दर्शकों ने हर पंक्ति पर तालियां बजाई। इसके बाद मनोज राय ने नेपाली गीत सुनाया, भले ही गीत के बोल दर्शकों के समझ में सीधे नहीं आ रहे थे परंतु भावों से भावों का बंधन बंध गया था जिसमें सभी दर्शकों को कलाकारों के साथ जोड़ रखा था। गीत के दौरान एक युवा लड़की एवं लड़के के बीच की बातचीत को दर्शाया गया था। इसके पश्चात् कोलकाता से आई प्रसिद्ध बंगाली गायिका देवयानी दत्ता ने 'पिया बावरी' और 'अलबेला सजन आयो रे' की शास्त्रीय प्रस्तुति देकर दर्शकों को आत्ममुग्ध कर दिया। कार्यक्रम को और जीवंत और रसपूर्ण बनाते हुए ओडिशा के जाने-माने नर्तक रूद्र प्रसाद स्वान ने अपने नृत्य के माध्यम से मानव शरीर के पांचों तत्वों को मूर्त्त रूप दे दिया। इसके अलावा मणिपुर के आर० के० गीतांजली,

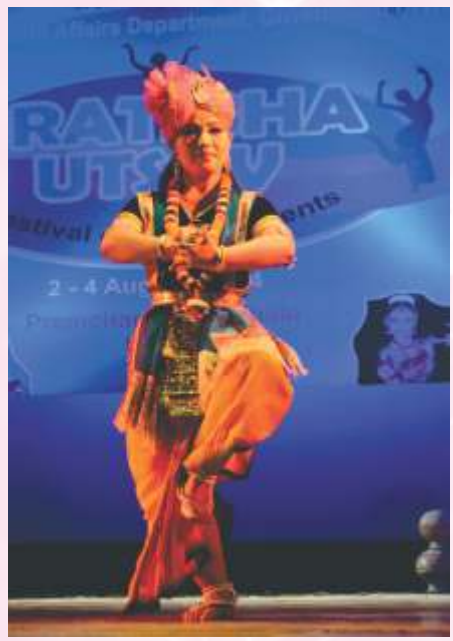

झारखण्ड की बवली कुमारी, असम की रेखा मोहंती तथा ओडिशा की ही गीतांजली महापात्रा ने अपनी-अपनी अद्भुत प्रस्तुतियों से रंगशाला परिसर को नई छटा दे दी।

- अविनाश कुमार झा

सुर्खियों में संस्कृति

सोते हुए बच्चे की मासूमियत हो या जागते हुए बच्चे की खिलखिलाहट, स्त्री शक्ति की अभिव्यक्ति हो या उसका रुदन हो, जीवन का संघर्ष हो या मां और बच्चे का मधुर संबंध, ऐसे ही तमाम भाव देखने को मिले मंगलवार को बिहार ललित कला अकादमी में, यहां कला मंगल श्रृंखला के तहत युवा कलाकारों की कलाकृतियों की समूह प्रदर्शनी का शुभारंभ हुआ.

मानो बोल उठेंगी कलाकृतियां

फिल्मों से युवाओं को मिले ऊर्जा

- तीन दिवसीय जागरण फिल्म फेस्टिवल शुरू

सूबे में बनेगा फिल्म स्टूडियो

- स्टूडियो न होने की वजह से कलाकारों को दिक्कत
- बोले मंत्री, कलाकारों को मिलेगा रोजगार
- फिल्म योद्धा के प्रमोशन कार्यक्रम में हुए शामिल

मुंशी प्रेमचंद की जयंती पर शहर में हुए नाटक व परिचर्चा

आज भी सबके नायक

- कला, संस्कृति एवं युवा विभाग के मंत्री विनय बिहारी ने प्रेमचंद को बताया गुरु

पाटलिपुत्र सिने सोसाइटी के उत्सव में जुटे युवा

सोसाइटी से जुड़े युवाओं ने रखी बात

खिलाड़ियों के लिए खुश-खबर

पटना में बनेगा इंटरनेशनल लेवल का स्टेडियम

लाइफ रिपोर्टर @ पटना

बिहार के खिलाड़ियों के लिए खुश होने का वक्त आ गया है. अब उन्हें अच्छे स्टेडियम की कमी नहीं खलेगी. पटना में इंटरनेशनल स्तर के स्टेडियम ... पर विचार हो रहा है. इसमें ... तरह के स्टेडियम का निर्माण ... रेलवेज और द बिहार स्टेट ... लिमिटेड द्वारा कॉरपोरेट सोशल ... तहत कराया जायेगा. पटना में ... स्थित पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स ... एक कॉम्प्लेक्स में कई तरह के ... दीघा में एक अन्य मल्टीपरपस स्टेडियम ... कार्य जारी है.

आदि गायन ध्रुपद के पदों के मुखर होने से पहले वातावरण में रस घोल गई शहनाई पर बनारसी कजरी

एक शाम संगीत संस्कारशाला के नाम

बिहार में ध्रुपद गायन ...

बरखा ऋतु आयो रे कार्यक्रम में पंडित संजीव अभ्यंकर की प्रस्तुति ने मोहा

सुरों की बारिश, सराबोर श्रोता

Indian Arts Offset, Patna-6, Mob. 9431011172